International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(2): 04-06

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(2): 04-06
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-01-2018
Accepted: 03-02-2018

**डा0 सुमन सामोता**
प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, रा0 व0 मा0 विद्यालय, मारौत (झज्जर), हरियाणा, भारत

**Correspondence**
**डा0 सुमन सामोता**
प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, रा0 व0 मा0 विद्यालय, मारौत (झज्जर), हरियाणा, भारत

# प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी की स्थिति

## डा0 सुमन सामोता

**सारांश**
इस शोध पत्र का उद्देश्य महान उपन्यासकार प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यर्गीय नारी के चित्रण का है। इसके माध्यम से हम यह स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे कि जो स्थिति उस समय में नारी की थी क्या वह आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई हैं या कोई बदलाव आया है तो कितना और किस प्रकार के बदलाव की आवश्यकता है।

**मूल शब्दः** अग्रसूचना, दूरदर्शी, उच्चाशयता, संतप्त, उच्छृंखल

**प्रस्तावना**
नारी आदिकाल से पुरूष की सहधर्मचारिणी रही है। इसलिए उसे अर्द्धांगिंनी, शक्तिस्वरूपा आदि कहकर सम्मानित किया गया है। हिन्दी पुराणों में प्रत्येक देवता के साथ उसकी कल्पना तथा शाक्तगामों में ब्रह्म, विष्णु तथा शिव को सर्जनपालन–सहारात्मक शक्तियों की नियामिका के रूप में भगवती आदि शक्ति की प्रतिष्ठा नारी की ही गरीयसी गरिमा के प्रमाण है। सेवा और वात्सल्य को स्त्री की मूल प्रकृति माना जाता है। और प्रेम उसके जीवन का आधार। नारी का हृदय सेवा के सूक्ष्म तत्वों से बना है। उसका प्रेम तो सेवा है ही अधिकार और क्रोध भी सेवा है। वैसे तो प्रेमचन्द के उपन्यासों में प्रत्येक वर्ग के पात्रों को प्रतिनिधित्व मिलता है–''पर जब हम उनके समस्त व्यक्तित्व का अध्ययन करते है तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनका मन जितना मध्य और निम्नवर्ग की समस्याओं में रमा है उतना उच्च वर्ग की समस्याओं एवं प्रश्नों में नहीं।''[1] इस तथ्य के मूल में मात्र यही कारण हैं कि– ''प्रेमचन्द स्वयं उसी वर्ग से आये थे और उसकी चेतना, आशा, आकांक्षा को अभिव्यक्ति देने वाले सशक्त कलाकार थे। उनके पात्र मुख्यतः इसी वर्ग से निकलकर आये है।''[2] समाज में सदैव मध्य वर्ग ही अधिक समस्याग्रस्त रहा है। उसमें न तो उच्च वर्ग जैसी सम्पन्नता है और न ही निम्न वर्ग के सदृश फाका मस्ती। साथ ही–''मध्यवर्ग की एक बड़ी लाचारी यह है कि गरीब होने पर भी वह नहीं चाहता कि उसे लोग गरीब समझे। तभी तो उसे मुलम्मेबाजी कर सहारा लेना पड़ता है।[3]
मध्यवर्ग की नारी की समस्या भी एक जटिल समस्या है। आर्थिक पराधीनता तो उसके साथ है ही, सामाजिक और नैतिक नियमों से भी वह बुरी तरह बंधी हुई है। निम्न वर्ग की नारी एक पति को छोड़कर दूसरा पति कर सकती है। इसी प्रकार उच्च वर्ग की नारी में भी यौन–पवित्रता को इतना महत्व नहीं दिया जाता पर मध्यवर्ग की नारी घर की लक्ष्मी समझी जाती है। उस पर घर की प्रतिष्ठा आधारित रहती है।''[4] चूकिं वह मानव–मूल्यों के प्रति सर्वाधिक जागरूक है। इसलिए वह न तो यन्त्र बन सकता है न तन्त्र। अपनी–अपनी इन्ही सारी विवशताओं के चलते वह इज्जत जुगाते–जुगाते उधड़ जाता है और अन्त में बेइज्जत हो जाता है। भारत का मध्यवर्ग बाहर से अपने को सर्वाधिक प्रगतिशील सचेत और बुद्धि सम्पन्न घोषित करता है लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि वह भीतर से भयंकर रूप से अनुदार, रूढ दकियानूस है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्ग के अन्तर्गत गिने जाने वाले सभी उपवर्गो का समायोजन हो जाता है। मध्यवर्ग की मनीषा, उसके व्यवहार, दिखावे और उनकी विडम्बना की सबसे सफल अभिव्यक्ति प्रेमचन्द के जिस उपन्यास में हूई है वह है–'गबना'। गबन की नायिका बाबू वर्ग की पत्नियों का पूर्ण प्रतिनिधित्व करती है। जालपा का परिचय देते हुए डा0 रामविलास शर्मा ने अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है–

[1]भटनागर, महेन्द्र (1957) समस्यामूलक उपन्यासकार : प्रेमचन्द
[2]प्रसाद, सरोज प्रेमचन्द के उपन्यासों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफलन (पृ0 31, पृ0 255)
[3]प्रसाद, सरोजः प्रेमचन्द के उपन्यासों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफलन, पृ0 258
[4]भटनागर, महेन्द्र (1957) समस्यामूलक उपन्यासकारः प्रेमचन्द पृ0 30

''जालपा भारत का उगता हुआा नारीत्व है। वह भविष्य के तुफानों की अग्रसूचना है। उसने वर्तमान की राह पर मजबूती से पांव रखा है और भविष्य की तरफ वह निःशंक दृष्टि से देखती है। वह एक नयी आग है जो झूठी संस्कृति के कागजी फूलों को भस्म कर देती है। वह सदियों की लांछना और अपमान को पहचानने वाली नई शूरता है जिसके आगे कोई बाधा ठहर नहीं सकती। वह हिन्दुस्तान के नये आने वाले इतिहास की भूमिका हैः– वह इतिहास जिसमें लाखों जालपा एक साथ आगे बढ़गी और ऐसे नारीत्व का चित्र अंकिगी जिसके सामने अतीत के सभी चित्र फींके लगेंगे।''[5]

आभूषणों से प्रेम जालपा के व्यक्तित्व का प्रमुख अंग है और यही उसकी विपत्तियों का मूल स्त्रोत भी है। आभूषण प्रेमचन्द–युगीन नारियों की कमजोरी थे। गहनों के प्रति नारी समाज की अत्यासक्ति के लिए प्रेमचन्द तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को दोषी मानते है– ''प्रेमचन्द मानते है कि आभूषणों के प्रति स्त्री की इस अत्यासक्ति के लिए केवल स्त्रियॉ ही दोषी नहीं है अपितु इसका दायित्व हमारी दोषपूर्ण समाज–व्यवस्था एवं परिवारों में स्त्री की अधिकार हीनता पर भी है।''[6] गबन की नायिका जालपा भी मध्य–वर्गीय नारी–समाज में व्याप्त इस दोष से बूरी तरह ग्रस्त है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जालपा की आपत्तियों का मूल उसी की आभूषणप्रियता में निहित है, किन्तु इसके लिए अकेली जालपा को दोष देना अन्याय होगा। इसमें समान रूप से भागीदार है– उसके पति रमानाथ का मिथ्याडम्बर तथा अतिशय संकोच। रमानाथ को अनेक अवसर मिले जबकि वह अपनी यह ग्रन्थि जालपा के सामने खोल सकता था, किन्तु हाय रे संकोच। अन्ततोगत्व जालपा के चरित्र बल की जीत हुई। यह प्रेमचन्द की लेखनी की ही सामर्थ्य थी जो उसने जालपा को शुद्ध मौलिक विलासित से उठाकर उस दिव्य परीत्व तक पहुॅचाया। वह मध्यवर्गीय नारी जरूर थी, लेकिन अपनी सच्चाई और ईमानदारी के बल पर उसने अपने आप को बहुत ही बड़ा साबित कर दिखाया।

दूसरी तरफ जागेश्वरी भी एक मध्यवर्गीय नारी है जो गबन उपन्यास की ही एक नारी पात्र है और इसमें जालपा की सास के रूप में उभरकर हमारे सामने आयी हैं। वह एक लालची औरत है। वह अपने पति के सिद्धान्तों से आजीवन कुढ़ती रही, वृद्धावस्था में उसकी बक–बक से तो ओर तंग आ गयी थी। अन्य मध्यवर्गीय महिलाओं के समान 'निर्मला' उपन्यास की कल्याणी भी आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त है। 'गबन' की जागेश्वरी जहॉ पति के धर्मात्मापने से परेशान थी वही कल्याणी अपने पति की अपव्ययिता से दुःखी है। उसे भविष्य के अंधकार में छिपा अपने बच्चों का जीवन बहुत धुधंला दिख रहा है। उदयभानु के यह कहने पर कि तुम मेरे मरने की ही कामना करती रहती हो, कल्याणी स्पष्ट उत्तर देती है–''इसमें बिगड़ने की तो कोई बात नहीं। मरना एक दिन सभी को है। कोई यहॉ अमर थोड़े ही आया है। आंखे बन्द कर लेने से तो होने वाली बात नहीं टलेगी। रोज आँखों देखती हूँ। बाप का देहान्त हो जाता है, उसके बच्चे गली–गली ठोकरे खाते फिरते हैं। आदमी ऐसा काम ही क्यों करें।''[7] पहले तो कल्याणी की ये बातें उसकी अशिष्टता का द्योतन करती है किन्तु बाद की घटनाएं देखकर लगता है कि उसी का क्रूर भविष्य उससे ये कठोर शब्द कहलवा रहा था। धनाभाव के कारण निर्मला का बेमेल विवाह और उसके कारण उसका उजड़ा हुआ जीवन यह सिद्ध कर देते हैं कि कल्याणी निश्चित रूप से एक दूरदर्शी तथा विवेकशील महिला है।

'रंगीली बाई' भी निर्मला उपन्यास की एक खाते–पीते परिवार की महिला के रूप में चित्रित की गई है जो किसी से कठोर शब्द कह भले दे, किन्तु किसी के प्रति अन्याय न सहन कर सकती है, न देख सकती है। निर्मला की पिता की मृत्यु के बाद जब पंडित मोटेराम विधवा कल्याणी का दुःख भरा पत्र लेकर बाबू भालचन्द्र के पास पहुंचे तो उन्होनें तो सम्बन्ध के लिए साफ इन्कार कर दिया, किन्तु रंगीली बाई ने जब वह पत्र देखा तो– ''पहली ही पाँति पढ़कर उनकी आँखें सजल हो गयी और पत्र समाप्त किया तो उनकी आँखों से आँसु बह रहे थे– एक–एक शब्द करूणा के रस में डूबा हुआ था। एक अक्षर से दीनता टपक रही थी। रंगीली बाई की कठोरता पत्थर की नहीं लाख की थी जो एक ही आंच में पिघल जाती है। कल्याणी के करूणोत्पादक शब्दों ने उनके स्वार्थमण्डित हृदय को पिघला दिया। रूंधे हुए कंठ से बोली– ''अभी ब्राह्मण बैठा है न।''[8] इस प्रकरण के अतिरिक्त रंगीली बाई और कहीं दर्शन नहीं देती। अपनी इसी संक्षिप्त भेंट से वह पाठकों के हृदय पर अपनी उदारता तथा उच्चाशयता की अमिट छाप छोड़ देती है।

'कायाकल्प' उपन्यास में चित्रित निर्मला मुंशी वज्रधर सिहं की पत्नी एक पुराने विचारों की महिला है। जब बाबू यशोदानन्दन चक्रधर के लिए अहिल्या के विवाह का प्रस्ताव लाते हैं तो मुंशी जी पहले तो तैयार हो जाते हैं, किन्तु जब उन्हे ज्ञात होता है कि अहिल्या यशोदानन्दन की बेटी न होकर मेले से प्राप्त किसी की खोई हूई बालिका है तो सहसा बिदक जाते है। निर्मला भी उन्ही के स्वर में स्वर मिलाते हुए कहती है– ''जो लोग मीठी बातें करते है उनके पेट में छुरी छिपी रहती है। न जाने किस जाति की लड़की है। क्या ठिकाना। तुम साफ–साफ लिख दो, मुझे नहीं करना। बस।''[9] वह हमेशा अन्तर्द्वन्द्व में जीती रहती है। वह एक अभागिन नारी है जो पुरातनता की आदि हुए समय के साथ चलने की चेष्ठा करती है किन्तु यह सब करने के बावजूद परिवार को फलते–फूलते देखने की उसकी चिर–संचित अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पाती।

सुमित्रा भी इसी तरह की एक पात्र है जो 'प्रतिज्ञा' उपन्यास की नारी–पात्र है जो सम्पन्न परिवार की बहु होकर भी घोर मानसिक यातना सहते हुए घुट–घुट कर जीवन बिताती हैं, किन्तु किसी भी क्षण अपने स्वाभिमान के स्तर को नीचा नहीं होने देती। यों तो सुमित्रा को कोई दुःख नहीं था किन्तु अपने प्रति अपने पति की उदासीनता के कारण वह हर समय संतप्त रहती थी। उसका दुःख तब और बढ़ गया जब पूर्णा नामक विधवा तरूणी उसी के घर में रहने लगी। पहले तो उसने सोचा था कि चलो एक दुखिया सहेली मिली, इसी को अपनी व्यथा सुनाकर अपना मन हल्का कर लिया करूँगी। किन्तु जब कमला प्रसाद की विलास दृष्टि पूर्णा तक पहुँच गयी तो उसका पुराना दुःख घटने की बजाय और बढ़ने लगा– ''पति के हृदय को पाने के लिए वह नित्य नया श्रृगांर करती थी और अभीष्ट के पूरा न होने से उसके हृदय में ज्वाला–सी दहकती रहती थी। घी के छींटों से भभकना तो ज्वाला के लिए स्वाभाविक ही था, वह पानी के छीटों से भी भभकती थी, कमला प्रसाद जब उससे अपना प्रेम जताते तो, तो उसके जी में आता कि छाती में छुरी घोंप लूँ।''[10] लेकिन दूसरी तरफ उसके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इतना सब होते हुए भी पूर्णा की ओर से उसका मन मैला कभी नहीं रहा, अब तो वह उसकी भक्त ही बन गई थी। एक दिन उसने प्रेमा से कहा– ''.....ऐसा रोते हैं जैसे कोई लड़की मैके से विदा होते वक्त रोती हैं..... मैं तो पूर्णा को पाऊॅ तो उसके चरण को धोकर पीऊँ''[11] इस प्रकार सुमित्रा के माध्यम से मध्यवर्गीय परिवारों में असफल दाम्पत्य का एक चित्र प्रस्तुत किया है। सुमित्रा का जीवन दाम्पत्य तनाव से ग्रस्त है पूर्णा के प्रवेश से यह तनाव और बढ़ जाता है। सुमित्रा का बुद्धि कौशल पूर्णा को ही अस्त्र बनाकर एक ही बार में सभी समस्याओं को निर्मूल कर देता है।

'रंगभूमि' की कुल्सूम एक मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की नारी, है जो पारिवारिक अन्तः कलह तथा अपने पति के अत्यन्त सीधेपन के बीच भाग्य के थपेड़ों को सहती हुई जीवन बिताती है। कुल्सूम की

[5]शर्मा, रामविलास (1952) प्रेमचन्द और उनका युगः, पृ0 70
[6]सिहँ, भरत प्रेमचन्द के नारी–पात्रः, पृ0 96
[7]प्रेमचन्द (1927) निर्मलाः, पृ 18
[8]प्रेमचन्द (1927) निर्मलाः, पृ0 29
[9]प्रेमचन्द (1926) कायाकल्प, पृ0 95
[10]प्रेमचन्द (1904) प्रतीज्ञाः, पृ0 55
[11]प्रेमचन्दः प्रतीज्ञाः, पृ0 137

प्रमुख समस्या है– उसकी दो सौतेली सासों द्वारा आर्थिक तथा मानसिक रूप से उसका शोषण। धैर्य तथा सहनशीलता कुल्सूम के प्रमुख गुण हैं। सूरदास की जमीन के प्रकरण को लेकर क्षुब्ध पांडेपुर के लड़कों और ताहिर–परिवार के बालकों के बीच हुए संघर्ष की चपेट में आ जाने से ताहिर अली के घायल व अचेत हो जाने पर जैनब और रकिया कुल्सूम पर खूब तानाकशी करती हैं, पर बेचारी कुल्सूम सभी कुछ शान्त चित्त से सुनती और सहती है। स्थिति शान्त होने पर वह अपने परिवार को यह नौकरी छोड़ने की भी सलाह देती है। वह एक दूरदर्शी महिला है।

दूसरी ओर 'सेवासदन' की शान्ता का जीवन उसके नाम के अनुसार ही शान्ति सद्भाव तथा सौमनस्य से पूर्ण था। बाल्यावस्था में ही शान्ता को भाग्य ने आपदाओं के घोर बीहड़ में छोड़ दिया था। शान्ता के चरित्र की सबसे प्रमुख और प्रथम विशेषता उसकी अपने माता–पिता के प्रति सहानुभूति है। पिता के कारावास की अवधि में शान्ता के परिवार को उसके मामा के यहाँ आश्रय तो मिला किन्तु वहाँ उनका जीवन निराश्रितों से भी गया बीता था। एक बार माँ के हाथों से घी की हाँडी गिर जाने पर भी शान्ता ने दोष अपने ऊपर से लिया था। कारागार से मुक्त अपने असहाय व साधनहीन पिता के प्रति भी उसके ऐसे ही भाव थे। जब उसके पिता ने नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली तब..... ''सच्चा शोक शान्ता के सिवा और किसी को न हुआ। यद्यपि अपने पिता को वह सामर्थ्य हीन समझती थी तथापि संसार में उसके जीवन का एक आधार मौजूद था। अपने पिता की हीनावस्था ही उसकी पितृभक्ति का कारण थी।''[12] सेवासदन की सुमन है वो एक उच्छृंखल नारी के रूप में चित्रित हुई है। इसी प्रकार जाह्नवी भी एक अत्यन्त कर्कशा तथा निष्करूण है। वहीं पर सुशीला जो 'वरदान' उपन्यास की पात्रा है। अपने नाम को चरितार्थ करने वाली एक आदर्श भारतीय नारी है। वह अपने पति के प्रति भी अगाध तथा अनन्य प्रेम रखती है।

## निष्कर्षः

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द जी अपने उपन्यासों में नारी पात्रों का चित्रण बड़े ही संजीदगी से कर पाए है। उन्होने अपने पात्रों के मन के प्रत्येक अन्तर्द्वन्द्व को बड़े ही सहज तरीके से पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनके पात्र सामान्य और अतिसामान्य है। और मध्यवर्गीय नारी पात्रों का इतना संजीव चित्रण हमें प्रथमतः उन्हीं के उपन्यासों में देखने को मिलता है। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द को बनाया कुछ नहीं मिला। उन्होंने स्वयं ही अपने लिए भूमिका निर्माण किया और स्वयं ही उस पर भवन बनाया। इसलिए उन्होंने जो कुछ हमें दिया वह स्तुत्य एवं श्लाघनीय है। प्रेमचन्द की दृष्टि समाज–सापेक्ष होते हुए भी व्यक्ति निरपेक्ष कभी नहीं रही। उनके नारी चित्रण ने भी नारी–जागृति के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. भटनागर, महेन्द्र (1957) समस्यामूलक उन्यासकारः प्रेमचन्द
2. प्रसाद, सरोज प्रेमचन्द के उपन्यासों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफलन (पृ0 31, पृ0 255)
3. प्रसाद, सरोजः प्रेमचन्द के उपन्यासों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफलनः, पृ0 258
4. भटनागर, महेन्द्र (1957) समस्यामूलक उपन्यासकारः प्रेमचन्द, पृ0 30
5. शर्मा, रामविलास (1952) प्रेमचन्द और उनका युगः, पृ0 70
6. सिहँ, भरत प्रेमचन्द के नारी–पात्रः, पृ0 96
7. प्रेमचन्द (1927) निर्मलाः, पृ0 18
8. प्रेमचन्द (1927) निर्मलाः, पृ0 29
9. प्रेमचन्द (1926) कायाकल्प, पृ0 95
10. प्रेमचन्द (1904) प्रतीज्ञाः, पृ0 55
11. प्रेमचन्दः प्रतीज्ञाः, पृ0 137
12. प्रेमचन्द (1918) सेवासदनः, पृ0 171


[12]प्रेमचन्द (1918) सेवासदन, पृ0 171